डॉ० पद्मशास्त्री के कथासाहित्य में युगबोध

संस्कृत विषय में पी-एच.डी. की उपाधि हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी

चन्द्रकान्ता

शोध निर्देशिका

डॉ. अनीता

असि. प्रोफेसर संस्कृत विभाग

कला संकाय, डी.ई.आई.

संस्कृत विभाग, कला संकाय

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा-282005

2023

प्राक्कथन

संस्कृत भाषा संसार की समस्त परिष्कृत भाषाओं में प्राचीनतम है। इसको धार्मिक दृष्टि से 'देववाणी' या 'सुर-भारती' भी कहा जाता है। हिन्दु धर्म के सभी शास्त्र इसी भाषा में निबद्ध हैं और उनका उद्भव ऋषियों एवं देवताओं से माना जाता है। अतः उनसे सम्बद्ध होने के कारण यह देववाणी कहलाती है। दण्डी ने काव्यादर्श में लिखा है-

"संस्कृत नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः ।
भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाण भारती ॥"
(काव्यादर्श – 1/33)

साहित्य और समाज का अविच्छिन सम्बन्ध है। समाज यदि आत्मा है तो साहित्य उसका शरीर है। साहित्यकार समाज का ही अंग होता है उसे सामाजिक जीवन में ही अपने भावों, विचारों को अभिव्यक्त करने की प्रेरणा मिलती है। संक्षेप में साहित्य सामाजिक चेतना का परिचायक और मानव मस्तिष्क का पोषक है।

काव्य मानव मन की भावाभिव्यक्ति का रूप है। कवि मन के भाव जब पद्य रूप में शब्द और अर्थ रूप सहित बद्ध होते हैं, तब उसे काव्य कहा जाता है। काव्य में सत्यं शिवं सुंदरम् की भावना भी निहित होती है। अग्निपुराण में काव्य का स्वरूप इस प्रकार स्पष्ट किया गया है-

"संक्षेपाद् वाक्यमिष्टार्थव्यवचिछन्ना पदावली ।
काव्य स्फुरदलंकार गुणवद्दोषवर्जितम् ॥"
(अग्नि पुराण - 237/7)

अर्थात् अलंकार तथा गुण-युक्त एंव दोष-रहित और संक्षेप में इष्ट अर्थ को प्रकट करने वाली पदावली काव्य कहलाती है।

अभिराज राजेन्द्रमिश्र ने अपने अभिनव काव्यशास्त्रीय ग्रंथ में काव्य का लक्षण इस प्रकार स्पष्ट किया गया है-

"काव्यं रसात्मकं चेद् शब्दार्थकलेवरम् ।
भिद्यते खलु निर्मित्या रुचिरूपप्रभेदतः ।।"
(अभिराजयशोभूषणम् – 4/1)

काव्यशास्त्र में काव्य के प्रमुख रूप से दो भेद हैं- दृश्य काव्य तथा श्रव्य काव्य । अभिराज राजेन्द्रमिश्र ने भी काव्य के प्रमुखत: दो भेद स्वीकार किए हैं-

"दृश्यश्रव्यप्रकाराभ्यामादौ काव्यं द्विधा मतम् ।
रूपरूपकनाट्यानि दृश्यनामान्तराणि च ।।"
(अभिराजयशोभूषणम् – 4/19)

शैली के आधार पर श्रव्य काव्य के तीन भेद माने गए हैं – पद्य, गद्य और चंपू । पद्य के पुनः दो भेद हैं- प्रबंध काव्य और मुक्तक काव्य । प्रबंध काव्य के भी दो भेद हैं - महाकाव्य और खंडकाव्य ।

गद्यकाव्य पुनः चार प्रकार का होता है- मुक्तक, वृत्तगन्धि, उत्कलिकाप्राय एवं चूर्णक । प्रबन्धात्मक गद्य को प्राचीन आचार्यो द्वारा कथा एवं आख्यायिका के रूप में विभाजित किया है तथा उसे 'प्रबन्धकल्पनाकथा' एवं 'आख्यायिका-इतिवृत्ताश्रिता' के रूप में परिभाषित किया है, परन्तु सम्प्रति कथाओं का स्वरूप वैसा नहीं है जैसा प्राचीन काल की वृहत्कथा आदि का था । कथा कल्पना पर आधारित होती है और आख्यायिका इतिहास प्रसिद्ध होती है ।

भारतीय कथा-साहित्य विश्व कथा-साहित्य में सर्वश्रेष्ठ कथा-साहित्य का उद्गम श्रोत माना जाता है। भारतीय साहित्य की विश्व साहित्य के लिए जो देन है , उसमें संस्कृत कथा-साहित्य का विशेष महत्त्व है । संस्कृत भाषा में निबद्ध कथाओं का प्रचुर साहित्य है जो सैकड़ों वर्षो से मनोरंजन करता हुआ उपदेश देता आ रहा है।

भारतीय साहित्य का एकमात्र आधार है- वेद वेद ही भारतीय वाङ्मय का उपजीव्य है। ऋग्वेद के संवाद सूक्तों से भारतीय कथासाहित्य का मुख्य संवाद तत्त्व प्राप्त होता है। पुरुरवा-उर्वशी संवाद सरमा-पणि संवाद, विश्वामित्र-नदी संवाद, यम-यमी संवाद इत्यादि सूक्तों में तात्कालिक कथाओं को बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। ये संवाद कथासाहित्य का मूल उत्स हैं, इनके बिना भारतीय कथासाहित्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कथनोपकथन इन संवाद-सूक्तों की प्रमुख विशेषता है। इनमें प्रेम, हठ, व्यंग्य, तात्कालिक सामाजिक परिवेश नीति, उपदेश एवं लौकिक व्यवहार के ताने-बाने को बखूबी बुना गया है।

उपनिषदों में भी जीव-जन्तुओं की कथाएँ विशिष्ट रूप से आयी हैं , कुत्तों के द्वारा अपने नेता का चुनाव, दो हंसों के वार्तालाप से रैक्क का ध्यान भङ्ग होना इत्यादि।

रामायण में भी नीतिकथाओं का उल्लेख प्राप्त होता है। महाभारत में भी लोककथाओं और पशुकथाओं की प्रचुरता है, जिनमें नैतिक एवं धार्मिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षा पर भी जोर दिया गया है। शान्ति पर्व में कुल 12 कथाएँ हैं जिनमें सोने के अण्डे देने वाली चिडिया की कथा, चतुर सियार की कथा, गज-कच्छप की कथा प्रमुख है। आदि पर्व की कथाओं में शकुन्तलोपाख्यान, नलोपाख्यान, सावित्र्युपाख्यान कथा की दृष्टि से अत्यन्त उपादेय एवं महत्त्वपूर्ण हैं।

इस प्रकार वेद, ब्राह्मण-ग्रन्थों, उपनिषदों, बौद्ध जातकों तथा पुराणों में अनेक कथाएँ दी गई हैं, जिनमें शिक्षा और मनोरंजन दोनों उद्देश्य पूरे होते हैं।

संस्कृत के कथा-साहित्य का भण्डार अत्यन्त विशाल है जिसमें अनेक आश्चर्यजनक घटनाएँ और कथाएँ निकलती जाती हैं। संस्कृत कथा के अन्तर्गत कल्पित कथायें, ऐतिहासिक कथायें, पौराणिक कथायें, नीति कथायें, लोक कथायें इत्यादि अन्तर्भूत हैं।

भारत में कथाएँ मनुष्य को कौतुकमयी प्रवृत्ति को चरितार्थ करने के अतिरिक्त धार्मिक शिक्षण के लिए भी प्रयुक्त की जाती थीं। यही कारण है कि भारतीय कथा-साहित्य का विश्व साहित्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।

कथा-साहित्य केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं है बल्कि यह यथार्थ के चित्रण एवं सम्प्रेषण का माध्यम भी है। कथा-साहित्य समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं को बदलते मानवीय दृष्टिकोणों को उजागर करने में सक्षम होता है। कथा-साहित्य में जो भी वैचारिक विमर्श सामने आता है उसमें कथाकार के जीवनानुभव भी निहित होते हैं। साहित्यिक विधा के रूप में कथा का प्रचलन कब से प्रारम्भ हुआ, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता ।

बीसवीं शती के मध्यकालीन चार-पाँच दशकों (1930-1970) में कथासाहित्य का विपुल विस्तार सभी दृष्टियों से उल्लेखनीय है। इस अवधि में कुछ लेखकों ने निरन्तर कथालेखन का क्रम जारी रखा, जिनमें भट्टमथुरानाथ शास्त्री का नाम सर्वोपरि है।

कुछ विद्वानों ने विपुल संख्या में कथाएँ लिखी है जिनमें पं- गणेशरामशर्मा (डूंगरपूर, राजस्थान) श्रीधरप्रसाद पन्त सुधांशु (पीलीभीत, उत्तर प्रदेश) आदि के नाम लिये जा सकते हैं। बीसवीं शती के अन्तिम चरण में जो नये कथाकार प्रकाश में आये उन्होंने शैलीगत प्रयोगों को और आगे बढ़ाया तथा युग-परिवेश का चित्रण अधिक सजीव रूप में किया। आधुनिक संस्कृत कथाकारों में अभिराज राजेन्द्र मिश्र रेवाप्रसाद द्विवेदी, पद्म शास्त्री, नलिनी शुक्ला, हरिदत्त पालीवाल निर्भय, वनमाली विश्वाल, प्रकाश मित्र शास्त्री, प्रशस्य मित्र शास्त्री आदि प्रमुख हैं।

आधुनिक संस्कृत कथाकारों ने विभिन्न भाषाओं की प्रसिद्ध कथाओं का भी संस्कृत में अनुवाद करके कथा साहित्य की समृद्धि की है। ऐसे विद्वानों ने बंगला भाषा की कथाओं के अनुवाद को प्राथमिकता दी है। इसके अतिरिक्त अरबी भाषा के प्रसिद्ध अलिफलैला की कथाऐं, शेख सादी के गुलिस्ताँ की कथाएँ तथा तथा कुछ फारसी कथाओं का संस्कृत में अनुवाद हुआ है। शम्भूनाथ आचार्य ने 'नवलकथा' ग्रन्थ शीर्षक से हिन्दी अंग्रेजी आदि भाषाओं में लिखी गई कहानियों

का संस्कृत में अनुवाद किया है। डॉ० पद्मशास्त्री ने तो विश्व की सभी भाषाओं की 100 कथाओं का संस्कृत अनुवाद विश्व-कथाशतकम् नाम से प्रकाशित किया है। पद्मशास्त्री जी का ही दूसरा कथा-संग्रह संस्कृतकथाशतकम् के नाम से प्रकाशित है । डॉ० पद्मशास्त्री के यह दोनों कथा-साहित्य मेरे शोध का विषय हैं।

आधुनिक युग के संस्कृत विद्वानों में पद्मशास्त्री महोदय अप्रतिम अग्रगण्य हैं जिनके साहित्य को भारत की भौगोलिक सीमा से आगे बढ़ कर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त हुई है और जिन्होंने विश्व की विभिन्न भाषाओं के कथा साहित्य का संस्कृत में समावेश कर उसे सांस्कृतिक समृद्धि प्रदान की है। ऐसे विद्याभूषण कथा सम्राट पं. पद्म शास्त्री ने राजस्थान में साहित्य- साधना करते हुए देश का गौरव बढ़ाया।

उन्होंने देववाणी संस्कृत में जहाँ पद्यविधा को लेकर महाकाव्य एवं खण्डकाव्य सृजित किये, वहीं संस्कृत कथा-साहित्य की सर्जना में लघु कथा लेखन को लेकर वे पर्याप्त चर्चित रहे हैं। संस्कृत मासिक पत्रिका भारती में उनके द्वारा रचित लघुकथाएँ वर्षों से निरन्तर प्रकाशित होती रही हैं।

डॉ० पद्म शास्त्री का जन्म 17 नवम्बर 1935 को उत्तरप्रदेश के पिथौरागढ़ जिले में नैनीताल से लगभग 200 कि.मी. दूर सिंगाली नामक ग्राम में हुआ है। इनके दो विपुल कथा-साहित्य हैं-

1. विश्वकथाशतकम् – डॉ. पद्म शास्त्री द्वारा विरचित "विश्वकथाशतकम्" दो भागों में प्रकाशित है। इस ग्रन्थ में विश्व के अनेक देशों में प्रचलित लोककथाओं को संस्कृत के माध्यम से लिखा गया है। कवि के इस संग्रह ग्रन्थ में 100 कथाएँ संग्रहीत हैं।
2. संस्कृतकथाशतकम् – यह भी डॉ. पद्मशास्त्री द्वारा विरचित दो भागों में विभाजित हिन्दी अनुवाद सहित 100 कथाओं का संग्रह है।

डॉ० पद्म शास्त्री द्वारा संग्रहीत कथाएँ आधुनिक युग में लिखी जा रही लघु कथाओं के स्वरूप को व्यक्त करती हैं। इनमें लघुकथा के लिए आवश्यक सभी तत्त्वों यथा- कथावस्तु चरित्र चित्रण, कथोपकथन, देशकाल, वातावरण, भाषाशैली आदि को समुचित रूप में प्रस्तुत किया गया है। डॉ. पद्म शास्त्री की कथाओं में लौकिक यथार्थ का प्रतिबिम्ब सजीव रूप में प्रस्तुत हुआ है।

उद्देश्य – प्रत्येक कार्य को करने के पीछे एक उद्देश्य अवश्य होता है। उद्देश्य के निश्चित ज्ञान पर ही किसी भी कार्य की सफलता निहित होती है। उद्देश्य के ज्ञान के बिना शिक्षक उस नाविक के समान होता है जिसे अपने लक्ष्य का ज्ञान नहीं

तथा उसके विधार्थी उस पतवार विहीन नौका के समान हैं जो समुद्र की लहरों के थपेड़े खाती हुई तट की ओर बढ़ती जाती है।

आधुनिक संस्कृत साहित्य में मेरी रुचि है । यह पद्मशास्त्री जी के विश्वकथाशतकम् में संग्रहित स्वर्णकाक: नामक कथा पढ़ी , जिसमें धन लोलुपता का दुष्परिणाम प्रदर्शित किया गया है । यह कथा लौकिक यथार्थ का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करती है । इसे पढ़कर मुझे पद्म शास्त्री जी की अन्य कथाओं को पढ़ने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। इस शोध का उद्देश्य समाज में प्रचलित सामाजिक रूप से अनुपयोगी रूढ़ियों एवं परंपराओं को समाज के सम्मुख लाना , मनुष्य में कर्म के प्रति समर्पण, निष्ठा, एवं जन-कल्याण के लिए त्याग की भावना का संचार करना तथा लौकिक यथार्थ का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करना है ।

अतः इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए मैंने शोध प्रबन्ध के लिए इस शीर्षक का चयन किया है-

"डॉ० पद्मशास्त्री के कथासाहित्य में युगबोध"।

डॉ० पद्मशास्त्री की कृतियों पर अब तक हुए शोध कार्य इस प्रकार हैं –

1. "महाकवि पद्म शास्त्री व्यक्तित्व एवं कृतित्व" - 1986 ई.

   मंजु लोहिनी - कुमायूँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

2. "श्रीपद्मशास्त्रिविरचितसाहित्ये राष्ट्रियता एकमनुशीलनम्" - 2011 ई.

   विश्वम्भर दयाल शर्मा - जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

3. "डॉ० पद्मशास्त्री रचित पद्यपंचतंत्रम् का समीक्षात्मक अध्ययन" - 2014 ई.

   शिखा सिंह – संस्कृत , दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) , राजस्थान ।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि श्री पद्म शास्त्री रचित कथा-साहित्य पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। मेरे संज्ञान में इस विषय पर अभी तक शोध कार्य नहीं हुआ है , अतः यह शोध प्रासंगिक एवं उपयोगी है। तदर्थ मैंने अपने शोध के लिए इस विषय का चयन किया है । इसलिए मैंने श्री पद्मशास्त्री रचित कथा-साहित्य को अपने शोध का विषय बनाया है। अतः यह पूर्व शोधकार्यों से सर्वथा भिन्न व मौलिक शोध होगा ।

वर्तमान समय में शोध के क्षेत्र में अनेक शोध प्रविधियाँ प्रचलित हैं । मेरे शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए अंतर्वस्तु विश्लेषण , वर्णनात्मक व विवेचनात्मक प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा।

विद्वज्जनों से आग्रहपूर्ण निवेदन है कि सहृदय सुधीजन मुझे “डॉ० पद्मशास्त्री के कथासाहित्य में युगबोध” विषय पर शोध कार्य करने की अनुमति प्रदान कर अनुग्रहीत करेंगे तथा क्षमाभाव से त्रुटियों को भुलाकर मेरा मार्गदर्शन करेंगे।

डॉ० पद्मशास्त्री के कथा-साहित्य में युगबोध

- **प्राक्कथन**

प्रथम अध्याय – डॉ० पद्मशास्त्री : व्यक्तित्व व कर्तृत्व

(क) डॉ० पद्मशास्त्री का जीवन-परिचय

(ख) डॉ० पद्मशास्त्री का साहित्यिक-परिचय

(ग) डॉ० पद्मशास्त्री कृत ‘विश्वकथाशतकम्’ तथा ‘संस्कृतकथाशतकम्’ कथाकृतियों का प्रतिपाद्य

द्वितीय अध्याय – संस्कृत कथा-साहित्य : स्वरूप व परम्परा

(क) संस्कृत कथा : स्वरूप व परम्परा

(ख) आधुनिक संस्कृत कथा-साहित्य में ‘विश्वकथाशतकम्’ तथा ‘संस्कृतकथाशतकम्’ कथाकृतियों का स्थान

तृतीय अध्याय – डॉ० पद्मशास्त्री के कथा-साहित्य में युगबोध

(क) सामाजिक व सांस्कृतिक युगबोध

(ख) राजनीतिक व आर्थिक युगबोध

(ग) धार्मिक व शैक्षिक युगबोध

चतुर्थ अध्याय – अध्येय कथा-साहित्य में शिल्प-विधान

(क) भाषागत वैशिष्ट्य

(ख) रस-निरूपण

(ग) अलंकार-विधान

पञ्चम अध्याय – कथाशास्त्रीय तत्त्वों के आधार पर डॉ० पद्मशास्त्री के कथा-साहित्य की समीक्षा

उपसंहार – आधुनिक संस्कृत कथा-साहित्य को डॉ० पद्मशास्त्री का योगदान तथा वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता

<u>सन्दर्भ-सूची</u>

आधार ग्रन्थ

1. विश्वकथाशतकम् (प्रथम भाग), डॉ० पद्मशास्त्री , पुलकित प्रकाशन , जयपुर , 2015 ई०
2. विश्वकथाशतकम् (द्वितीय भाग), डॉ० पद्मशास्त्री , पुलकित प्रकाशन , जयपुर , 2015 ई०
3. संस्कृतकथाशतकम्(प्रथम भाग), डॉ० पद्मशास्त्री , रचना प्रकाशन , जयपुर , 2018 ई०
4. संस्कृतकथाशतकम्(द्वितीय भाग), डॉ० पद्मशास्त्री , रचना प्रकाशन , जयपुर , 2018 ई०

आधेय ग्रन्थ

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास , वे० वरदाचार्य , रामनारायणलाल बेनीप्रसाद प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता , इलाहाबाद - 1962 ई०
2. आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परा , केशव मुसलगांवकर , चौखंबा विद्याभवन वाराणसी , 2004 ई०
3. अभिराजयशोभूषणम् , अभिराज राजेंद्र मिश्र , वैजयन्त प्रकाशन , 2007 ई०
4. काव्यादर्श , आचार्य दण्डी , आचार्य श्री रामचंद्र मिश्र , चौखंबा विद्याभवन वाराणसी , 1991 ई०
5. अग्नि पुराण (द्वितीय खण्ड), पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब (वेद नगर) बरेली, द्वितीय संस्करण, 1969 ई०
6. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास , डॉ० कपिलदेव द्विवेदी , अनिल प्रिंटर्स 193/13 एलगिन रोड , इलाहाबाद

7. संस्कृत वाङ्गमय का वृहद् इतिहास(सप्तम खण्ड), आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय , उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान , लखनऊ

8. संस्कृत साहित्य बीसवीं शताब्दी , राधावल्लभ त्रिपाठी , प्रतिभा प्रकाशन शक्ति नगर दिल्ली , 1990 ई०

9. अग्निपुराण , महर्षि वेदव्यास , काशी संस्कृत ग्रन्थमाला, 1966 ई०

10. संस्कृत कथा साहित्य का अध्ययन , श्यामा भटनागर , प्रकाशन योजना जयपुर , 2000 ई०

संस्कृत पत्र-पत्रिकाएँ

1. अर्वाचीन संस्कृतम् (त्रैमासिक पत्रिका) , देववाणी परिषद वाराणसी उत्तर प्रदेश , 1999 ई०

व्याकरण व कोश ग्रन्थ

1. संस्कृत हिन्दी शब्दकोश, वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, 1967 ई०

2. संस्कृत साहित्य कोश, श्री कृष्ण सेमवाल, दिल्ली संस्कृत अकादमी, 1996 ई०

वेबसाइट्स

1. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/
2. https://www.sanskrit.nic.in/
3. https://ncert.nic.in/
4. https://www.wikiwand.com/
5. https://bharatdiscovery.org/
6. https://epustakalay.com/
7. http://www.ignited.in/
8. https://sanskritbhasi.blogspot.com/
9. https://www.exoticindiaart.com/
10. https://egyankosh.ac.in/